ओ३म्

‘माता के समान हितकारी गाय की रक्षा करना मनुश्य मात्र का परम कर्तव्य व धर्म’

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादूनं (Goraksha kartkvya 7 6 17)

संसार के जितने भी देष ा है या यह कहिये कि पृथिवी तल पर जहां–जहां भी मनुश्य है, वहां–वहां गाय भी विद्यमान हैं यह व्यवस्था ईष वर ने मनुश्यों के हितों को देखकर की हैं यदि उसे मनुश्य का हित करना अभीश्ट न होता तो ईष वर गाय को बनाता ही नहीं मनुश्यों को अपने हित व स्वार्थपूर्ति के लिए गाय की आवष यकता है, गाय को मनुश्यों की आवष यकता नहीं हैं बिना गाय के मनुश्य का जीवन जल व वायु रहित जीवन के समान होतां गाय एक पालतू पष ु हैं यदि हम संसार के सभी पष ुओं की गणना कर उनसे मनुश्य जीवन को होने वाले लाभों की दृश्टि से तुलना करें तो यह पायेंगे कि सभी पष ुओं में गाय ही ऐसा प्राणी है जो मनुश्य के जीवन को चलाने, बढ़ाने, बुद्धि को तीव्र व सूक्ष्म बनाने तथा रोगों से दूर रखने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं इस दृश्टि से अन्य पष ुओं का योगदान गौण हैं मां के दूध की तरह गोमाता का दूध भी मनुश्यों के लिए पूर्ण आहार होता हैं बच्चा हो या युवा अथवा वृद्ध, गाय का दूध सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए उपयोगी, क्षुधा को दूर करने वाला, स्वास्थ्यवर्धक, बलवर्धक, आरोग्यकारक, आयुवर्धक, बुद्धिबल विस्तारक, मनुश्य, समाज व राश्ट्र की अर्थव्यवस्था को सुदृण करने वाला आदि अनेकानेक गुणों से युक्त हैं यदि संसार में गाय न होती तो हमें लगता है कि संसार में मनुश्य भी न होता कारण कि तब कृशि के लिए बैल व खाद कहा से मिलते? मनुश्य व गाय, दोनो एक दूसरे पर आश्रित हैं गाय के इन्हीं गुणों के कारण वेदों में गोरक्षा पर पर्याप्त षि ाक्षायें, विचार व ज्ञानयुक्त कथन मिलते हैं वेद गो को विष व की माता बताने के साथ इसे विष व की नाभि भी घोशित करते हैं गो–हत्यारों के लिए मृत्यु दण्ड का प्राविधान करते हैं यह व्यवस्था ईष वर की, वेद ईष वरीय ज्ञान होने के कारण, है न की अल्पज्ञ व मलिन बुद्धि के मनुश्यों कीं आष चर्य होता है कि कोई विवेकष ील व अल्पज्ञानी मनुश्य ऐसे उपयोगी पष ु की हिंसा की वकालत व उसके मांस को भक्ष्य मानने की मूर्खता भी कर सकता है? फिर यह है इसलिए संसार का इससे बड़ा आष चर्य और कुछ नहीं हो सकतां अपवित्र बुद्धि के लोगों में ही गोहत्या एव उसके मांस के भक्षण की इच्छा हो सकती हैं जो भी गाय का मांस खाता है वह ईष वर व मनुश्य की जीवात्मा के स्वरूप व कर्मफल विधान से पूरी तरह अनभिज्ञ है और यह अनभिज्ञता उसे मूर्ख व अज्ञानी सिद्ध करती हैं

वैदिक धर्म में चेतन देवताओं में, ईष वर के बाद, माता का स्थान आता हैं ऐसा क्यों है व इसके पीछे क्या रहस्य वा तर्क हैं? माता बच्चे की जीवात्मा को अपने गर्भ में रखकर उसके ष ारीर के निर्माण में सहायक होती है और उसे जन्म देने के साथ उसका लालन व पालन भी करती हैं यह कार्य किसी सन्तान के प्रति केवल जन्मदात्री मां ही करती है, अतः माता का स्थान किसी भी सन्तान के लिए सर्वोपरि होता हैं गाय गोदुग्ध, गोमूत्र व गोबर प्रदान करती हैं गोदुग्ध से दही, घृत, मक्खन, मट्ठा, पनीर, खीर, स्वादिश्ट व्यंजन व मिठाईयां आदि अनेक पदार्थ बनते हैं जो मनुश्य के लिए स्वास्थ्यवर्धक होने के साथ उसकी क्षुधा वा भूख को मिटाते हैं गोदुग्ध का स्थान अन्न के समान व उससे भी ऊपर है, कारण यह है कि गोदुग्ध पूर्ण आहार है जबकि अलग–अलग अन्न में अपने–अपने विषि ाश्ट गुण होते हैं और उसे स्वतन्त्र वा अकेले न खाकर अन्य पदार्थों घृत, तेल, नमक, मिर्च, मसाले आदि मिलाकर व उन्हें रसोईघर में पकाकर सेवन किया जाता है जिसके लिए रसोई के नाना प्रकार के सामानों चूल्हे, ईधन, बर्तनों आदि की आवष यकता होती हैं गोदुग्ध ऐसा पूर्ण आहार है जिसे बिना किसी अन्न व रसोई आदि के सामान की अनुपस्थिति में भी सेवन करके स्वस्थ व बलवान रहा जा सकता हैं हमारी माताओं का ष ारीर जिसमें ईष वर सन्तान का निर्माण करते हैं, उसे भी जिन खाद्य पदार्थ अर्थात् भोजन की आवष यकता होती है उसकी पूर्ति भी गोदुग्ध व इससे बने पदार्थों से हो जाती हैं इस विशय में यह भी कह सकते हैं कि अन्न व फलों की तुलना में

गाय व गोदुग्ध आसानी से बारह महीनों व वर्श के 365 दिन उपलब्ध होता हैं माता व सन्तान के ष ारीरों व उसके प्रत्येक अंग की रचना में गोदुग्ध का महत्वपूर्ण स्थान हैं यदि गोदुग्ध न होता तो माता, पिता, सन्तान व अन्य मनुश्यों के ष ारीर भी न होतें अतः माता व सन्तान दोनों को जीवन देने का काम गोमाता व उसका दुग्ध करता हैं इस दृश्टि से गो एक पष ु न होकर हमारी जन्मदायिनी माता के समान व उससे भी कई बातों में कुछ अधिक ही सिद्ध होती हैं यही कारण है कि वेदों से लेकर हमारे महाप्रज्ञा के धनी ऋशियों ने गो व गोदुग्ध की महत्ता गाई है और गो को अवध्य कहने के साथ गोहत्यारों के गोहत्या के अधम कृत्य के लिए मनुश्य हत्या के समान पाप मानते हुए उसे मार देने का विधान किया हैं यह विधान गोमाता के महत्व की दृश्टि से उचित ही हैं यहां यह भी विचारणीय एवं जानने योग्य है कि गाय से हमें उसके बच्चे गाय व बैल भी मिलते हैं गाय से गोदुग्ध आदि अमृत तुल्य आरोग्य एवं बल वर्धक पदार्थों की प्राप्ति होती है तो बैल हमारे खेतों में हल के द्वारा जुताई व बुआई में सहायक होते हैं जिससे हमें भरपूर अन्न तो मिलता ही है साथ ही कृशि के लिए सर्वोत्तम व बिना मूल्य का खाद बैल का गोबर व मूत्र भी मिलता है जो खाद के साथ कीटनाष ाक का कार्य भी करता हैं यह सब उपलब्धियां बिना मूल्य एक गाय से हमें होती हैं

ऋशि दयानन्द ने देष ा में सबसे पहले गोरक्षा का कार्य किया और गोहत्या बन्द करने की मांग की थीं इसके लिए उन्होंने एक आन्दोलन भी किया था और गोहत्या बन्द करने के लिए एक मैमोरैन्डम तैयार किया था जो इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया को सम्बोधित थां उनका प्रयास था कि देष ा के करोड़ों लोगों के हस्ताक्षर कराकर इसे वह महारानी विक्टोरिया को भेजेंगें कार्य तीव्र गति से चल रहा थां लाखों वा करोड़ो लोगों के हस्ताक्षर करा लिये गये थे और कुछ करने ष ेश थें इसी बीच उनके विरोधियों ने विश देकर उनका जीवन समाप्त कर दियां इससे हानि यह हुई कि गोरक्षा, गोसंवर्धन वा गोहत्या बन्दी का काम बीच में अधूरा ही छूट गयां यह भी बता दें कि गांधी जी भी गोरक्षा के प्रबल समर्थक थें उनका यंग इण्डिया में गोरक्षा के समर्थन और गोरक्षा के विरुद्ध लिखा गया लेख उपलब्ध है जिसमें उन्होंने गोरक्षा के विरोधियों के प्रति कठोर कार्यवाही का समर्थन किया हैं अतः यदि ऋशि दयानन्द कुछ और वर्श जीवित रहते या गांधी जी जीवित रहे होते तो अनुमान है कि वह देष ा में गोहत्या तो किसी कीमत पर न होने देतें हम यह भी बता दें कि स्वामी दयानन्द ने अपनी पुस्तक गोकरुणानिधि में गाय से होने वाले आर्थिक लाभों की गणना कर सिद्ध किया है कि गोरक्षा देष ा की खाद्यान्न सुरक्षा की गारण्टी हैं सभी देष ावासियों को इसे निश्पक्ष भाव से पढ़ना चाहियें

संसार में मांसाहार इस लिए भी बढ़ रहा है कि मांसाहार करने वाले लोगों को मांसाहार के सभी पहलुओं व हानियों का ज्ञान नहीं हैं जो लोगों पढ़े लिखे व समझदार हैं वह विवेक की कमी, अपनी जीभ के स्वाद व कुछ धार्मिक व अन्य कारणों से इसका प्रचार नहीं करते और न ही आम जनता के सामने सत्य पक्ष को रखते हैं कई मतों ने इसे अपने धर्म से भी जोड़ रखा है जिसका कारण उनके मतों में इसके पक्ष में कुछ उल्लेख मिलते हैं जो मांसाहार के पोशक हैं हमारी दृश्टि में उन उल्लेखों को आपद धर्म मानकर मांसाहार को सर्वथा छोड़ देना चाहियें जब साधारण व अज्ञानी मनुश्यों पर प्राण रक्षा का संकट आ जाये तो उस समय वह अपने जीवन की रक्षा के लिए अभक्ष्य पदार्थ का सेवन कर लेते हैं परन्तु सामान्य स्थिति में जब अन्य भक्ष्य पदार्थ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हों, तब मांसाहार करना रोगों सहित अल्पायु को आमंत्रित करने के साथ कर्मफल सिद्धान्त के अनुसार जन्म–जन्मान्तर में पष ुओं के समान जीवन व पीड़ा का भोग कराने वाला होगां परजन्मों में हमारी स्थिति वैसी ही होगी जैसी की इस जन्म में हमारे निमित्त से अन्य प्राणियों की हुई हैं हम समझते हैं कि यदि संसार के सभी लोग ज्ञानी व बुद्धिमान होते और उन्होंने वैदिक धर्म के सिद्धान्तों व उसकी युक्तियों सहित लाभ व हानि को जाना व समझा होता तो वह पवित्र बुद्धि होकर गोहत्या व गोमांसाहार में प्रवृत्त होने का निन्दित कर्म कदापि न करतें हम मांसाहार नहीं करते व हमने जीवन में इसे छोड़ दिया इसका कारण केवल हमारा ज्ञान व विवेक हैं यही ज्ञान व विवेक इतर मत–मतान्तरों व लोगों में भी होता तो वह हमारी ही तरह गोरक्षा के समर्थक और गोहत्या व गोमांस के विरोधी होतें यहां भी मत–मतान्तरों की कुछ ष िाक्षायें व मनुश्यों का अविवेक ही इस समस्या के मूल में ज्ञात होता हैं

आर्यसमाज के संस्थापक, वेद और वैदिक साहित्य के द्रश्टा ऋशि दयानन्द ने एक लघु ग्रन्थ **'गोकरुणानिधि'** की रचना की थीं इसकी गवेशणापूर्ण भूमिका के कुछ अंष ा यहां प्रस्तुत हैं जो गोरक्षा के महत्व पर प्रकाष ा डालते हैं ऋशि दयानन्द लिखते हैं कि 'वे धर्मात्मा, विद्वान लोग धन्य हैं, जो ईष वर के गुण–कर्म–स्वभाव, अभिप्राय, सृश्टि–क्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण और आप्तों के आचार से अविरुद्ध चल कर सब संसार को सुख पहुंचाते हैं और ष ोक है उन पर जो कि इनसे विरुद्ध स्वार्थी, दयाहीन होकर जगत् की हानि करने के लिए

वर्तमान हैं पूजनीय जन वो हैं जो अपनी हानि हो तो भी सबका हित करने में अपना तन, मन, धन सब–कुछ लगाते हैं और **तिरस्करणीय वे हैं जो अपने ही लाभ में सन्तुश्ट रहकर अन्य के सुखों का नाष ा करते हैं** वह आगे लिखते हैं कि सृश्टि में ऐसा कौन मनुश्य होगा जो सुख और दुःख को स्वयं न मानता हो? **क्या ऐसा कोई भी मनुश्य है कि जिसके गले को काटे वा रक्षा करें, वह दुःख और सुख को अनुभव न करे? जब सबको लाभ और सुख ही में प्रसन्नता है, तब बिना अपराध किसी प्राणी का प्राण वियोग करके अपना पोशण करना सत्पुरुशों के सामने निन्द्य कर्म क्यों न होवे?** सर्वष ाक्तिमान जगदीष वर इस सृश्टि में मनुश्यों की आत्माओं में अपनी दया और न्याय को प्रकाषि ात करे कि **जिससे ये सब दया और न्याययुक्त होकर सर्वदा सर्वोपकारक काम करें और स्वार्थपन से पक्षपातयुक्त होकर कृपापात्र गाय आदि पष ाुओं का विनाष ा न करें कि जिससे दुग्ध आदि पदार्थों और खेती आदि क्रिया की सिद्धि से युक्त होकर सब मनुश्य आनन्द में रहें '**

महर्शि दयानन्द ने एक गाय की एक पीढ़ी से उत्पन्न बछिया और बैलों से होने वाले दुग्ध व अन्न का गणित व अर्थष ाास्त्र के अनुसार हिसाब लगाया है और सिद्ध किया है कि एक गाय की एक पीढ़ी से 4,10,440 मनुश्यों का पालन एक समय व एक बार के भोजन के रूप में होता हैं यदि गाय की उत्तरोतर सन्ततियों पर विचार करें तो गाय से असंख्य मनुश्यों का पालन होता हैं गाय का मांसाहार करने से केवल अस्सी मनुश्य एक बार के भोजन के रूप में तृप्त हो सकते हैं इस पर टिप्पणी करते हुए वह कहते हैं कि **'देखो ! तुच्छ लाभ के लिए लाखों प्राणियों को मार असंख्य मनुश्यों की हानि करना महापाप क्यों नहीं?' गाय के ही समान ऋशि दयानन्द ने भैंस,** ऊंटनी व बकरी से मिलने वाले दूध व उससे होने वाले भोजन संबंधी आर्थिक लाभ की गणना कर भी इन पष ाुओं की रक्षा का भी आह्वान व समर्थन किया हैं मनुश्य उसे कहते हैं जो मननष ाील हों अपने व दूसरों के सुख, दुःख व हानि लाभ को समझें यदि मनुश्य ऐसा होगा तो वह न तो गोहत्या करेगा, न गोमांस व अन्य पष ाुओं का ही मांस खायेगां हमने निश्पक्ष भाव से यह लेख लिखा हैं लोग मानवीय व देष ा के आर्थिक हितों के दृश्टिकोण से इस पर विचार करें तो उन्हें अपने कर्तव्य का बोध हो सकेगां हमें यह भी आष चर्य होता है कि लोग कागज के नोटों व जड़ पदार्थों की रक्षा में तो अपना जीवन व्यतीत करने सहित अपने प्राणों को भी दांव पर लगा देते हैं परन्तु ईष वर द्वारा हमारे हित के लिए बनाये गये गाय आदि प्राणियों पर निर्दयता का व्यवहार करते हैं उन्हें किस आधार पर मनुश्य कहें हमें समझ में नहीं आता? इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं ओ३म् षाम्

–मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः09412985121

ओ३म्

–आर्श गुरुकुल पौंधा में गुरुकुल सम्मेलन–

‘विद्या–व्रत में स्नान किये हुए को स्नातक कहते हैंः डा. ज्वलन्त ष ाास्त्री’

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

गुरुकुल पौंधा में रविवार दिनांक 4 जून, 2017 को आयोजित **‘गुरुकुल सम्मेलन’** में अपने व्याख्यान में अमेठी निवासी आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान डा. ज्वलन्त कुमार ष ाास्त्री ने कहा कि वह संस्कारविधि पर ष ाोध कार्य कर रहे थें उन्होंने विलक्षण बात यह देखी की स्वामी दयानन्द जी ने संस्कारविधि में प्राचीन ग्रन्थों से सभी अच्छी अच्छी बातें ली हैं ऋशि दयानन्द ने संस्कारविधि और पंचमहायज्ञ विधि में उन अच्छी बातों को भी अपने विवेक से सम्मिलित किया है जो बातें पुराने ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं हैं

आचार्य ज्वलन्त कुमार ष ाास्त्री ने प्रष् न किया कि लोग पूछते हैं कि वेदों में समावर्तन संस्कार का मूल कहां पर हैं उन्होंने कहा कि ब्रह्मचारी लगभग 14 वर्शों तक गुरुकुल में अध्ययन करता हैं क्या इस संबंध में वेद कुछ कहता है? आचार्य जी ने कहा कि ऋशि दयानन्द ने इन सभी कर्मों व संस्कारों से संबंधित वेद मन्त्रों के प्रमाण संस्कारविधि में दिये हैं आचार्य जी ने संस्कारविधि के उस पाठ को पढ़ा जिसमें कहा गया है कि ब्रह्मचारी द्वारा आचरण आदि कर्मों को पूरा करने पर उसका समावर्तन करें **डा. ज्वलन्त कुमार ष ाास्त्री जी ने कहा कि स्नातक उसे कहते हैं जिसने स्नान किया हों** स्नातक पारिभाशिक ष ाब्द हैं उन्होंने कहा कि जो विद्याव्रत धारण कर व्रत समाप्ति के बाद घड़ों के सुगन्धित जल से विधिवत स्नान करता है, वह ‘स्नातक’ प्रष ांसित होता हैं स्नातक विद्या व व्रत दोनों का स्नान करें (हमें लगता है कि इसका अर्थ है कि स्नातक सम्पूर्ण वेद विद्या को ग्रहण कर व्रत के रूप में उसको आचरण में लाकर उसका प्रचार भी करें यही विद्या व व्रत का स्नान करना प्रतीत होता हैं –मनमोहन) आचार्य जी ने कहा कि विद्या तो स्कूल व कालेजों में भी पढ़ाई जाती है परन्तु गुरुकल में अध्ययन काल में प्रातः 4 बजे सोकर उठ जाना, गुरुओं को प्रणाम करना, ईष् वरोपासना व यज्ञ करना, गुरुकुल में आचार्यों के सान्निध्य में रहना विशयक ब्रह्मचारियों के पालनार्थ 22 उपदेष ा हैं विद्वान वक्ता ने कहा कि 7 उपदेष ा स्वामी जी ने बनाये हैं उन सबका गुरुकुल का ब्रह्मचारी पालन करता हैं उन्होंने कहा कि इस प्रकार की विष ेशतायें आजकल के स्कूल व कालेजों में नहीं हैं आचार्य जी ने कहा कि व्रत का स्नान न करने के कारण आजकल के विद्यार्थी व उनके गुरुजन भी मांस व ष ाराब आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करते हैं आचार्य जी ने आजकल देष ा व विष् व में हो रहे फिदायीन हमलों का भी उल्लेख कियां उन्होंने बताया कि जेहादियों को पढ़ाया जाता कि आतंक की घटना को क्रिया रूप देने से पहले अपने ष ारीर पर सुगन्धित पदार्थों को लगाओं उन्होंने कहा कि कुरान में उल्लेख है कि जन्नत में हुरों को पाने के लिए अपने ष ारीरों को सुगन्धित करों इसी कारण जेहादी व आतंकवादी अपने अपने ष ारीर को सुगन्धित करते हैं जिससे हुरें उन्हें अपनायें आचार्य डा. ज्वलन्त कुमार ष ाास्त्री ने कहा कि सारी दुनिया में सत्यार्थप्रकाष ा ग्रन्थ का प्रचार होना चाहियें यदि आतकवादी सत्यार्थप्रकाष ा के 12, 13 व 14 समुल्लासों को पढ़ लें तो वह आतंकवादी सोच से मुक्त हो सकते हैं उन्होंने कहा कि देष ा के युवा विद्या को प्राप्त कर सच्चे स्नातक बनने चाहिये जो वेद व्रत धारी हों

डा. ज्वलन्त कुमार ष ाास्त्री जी ने कहा कि संसार में संस्कारों से संबंधित जिस ग्रन्थ का सबसे अधिक सम्मान है वह ग्रन्थ पारस्कर सूत्र हैं इस ग्रन्थ के अनुसार 6 लोग आचार्य, पुरोहित, दामाद, राजा, स्नातक और अपना प्रिय मित्र सम्मान के पात्र हैं महाराज मनु जी का उल्लेख कर आचार्य जी ने कहा कि वह सम्मानित होता है जिसके लिए कोई रास्ता छोड़ता है अर्थात् पहले उसे जाने देता है और उसके बाद स्वयं जाता हैं कौन किसके लिए मार्ग छोड़े, इसका उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि वाहन व पैदल में से वाहन को पहले जाने दिया जाता

हैं यदि मार्ग में कोई 90 वर्श का महामूर्ख भी आ रहा हो तो पहले उसे जाने देना चाहियें यदि किसी ने अपने ष ारीर पर बोझ रखा हो तो पहले उसे जाने देना चाहियें महिलाओं को पहले जाने देना चाहियें राजा यदि आ रहा है तो पहले उसे जाने देना चाहिये जिससे उनका सम्मान हों दुल्हे की बारात को पहले जाने देना चाहियें आचार्य जी ने कहा कि सबसे ज्यादा सम्मानित स्नातक और राजा हैं, उन्हें पहले स्थान देना चाहियें अन्त में आचार्य जी ने कहा कि मनु जी कहते हैं कि यदि राजा व स्नातक आ रहे हों तो राजा को चाहिये कि वह स्नातक के लिए रास्ता छोड़ दें

आचार्य जी ने संसार के मत—मतान्तरों की चर्चा की और कहा कि स्वामी ष ांकराचार्य जी सर्वोच्च हैं और अन्य सब धार्मिक नेता उनके बाद व उनसे नीचे हैं आचार्य जी ने स्वामी ष ांकराचार्य जी के जीवन की प्रमुख घटनाओं एवं उनके वैदुश्य पर भी प्रकाष ा डालां आचार्य जी ने इस्लाम के मौलवियों तथा ईसाई मत के पादरियों की भी चर्चा कीं उन्होंने कहा कि सभी पष्ि चमी देष ों के ष ासनाध्यक्ष रोम के पोप के आगे झुकते हैं आचार्य जी ने कहा कि आर्यसमाज की स्थिति खराब हैं आर्यसमाज को चलाने वाला आर्यसमाज के बारे में कुछ नहीं जानतां आर्यसमाजों में विवादों का उल्लेख कर उन्होंने कहा कि आर्यसमाजों व सभाओं को मुकदमेबाजी से बचना चाहियें उन्होंने कहा कि आर्यसमाज में ऋशि दयानन्द के मन्तव्यानुसार न्याय सभा होनी चाहियें आचार्य जी ने न्याय सभा बनाने का आह्वान कियां उन्होंने कहा कि देष ा में लगभग 200 राजनीतिक दल हैं परन्तु उनमें आर्यसमाज के समान विवाद नहीं हैं आचार्य जी ने कहा कि आर्यसमाज का नेतृत्व वेद विद्या के विद्वानों के हाथों में होना चाहियें उन्होंने आह्वान किया कि समाज व सभाओं में से अनपढ़ लोगों को हटायें व विद्वानों को लायें उन्होंने इस बात का प्रतिवाद किया कि यदि स्वामी प्रणवानन्द जी को सार्वदेषि ाक सभा का नेतृत्व सौंप दिया जाये तो सभी घटक एक हो जायेंगें आचार्य जी का समय समाप्त हो गया था अतः उन्होंने अपने वक्तव्य को विराम दे दियां ओ३म् ष ाम्

—मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला—2
देहरादून—248001
फोन:09412985121

ओ३म्

—आर्श गुरुकुल, पौंधा में आयोजित गुरु सम्मेलन में पं. धर्मपाल ष ास्त्री का संबोधन—

‘गुरुकुल के आचार्य का व्यवहार माता—पिता के व्यवहार से अच्छा होना चाहियेः पं. धर्मपाल ष ास्त्री’

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादूनं

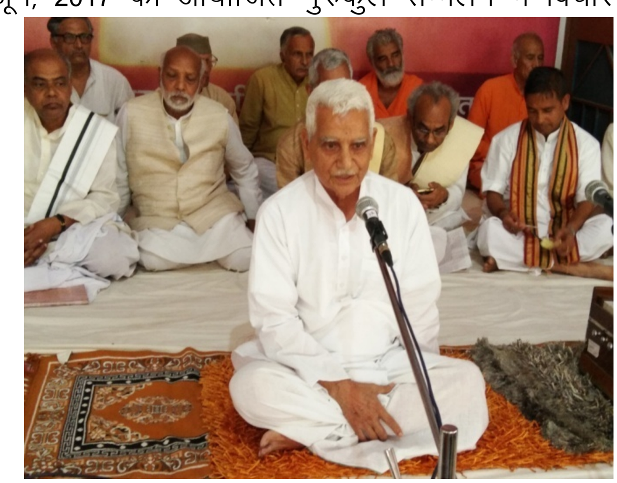

आर्श गुरुकुल पौंधा में रविवार 4 जून, 2017 को आयोजित गुरुकुल सम्मेलन में विचार प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित करने पर आर्य विद्वान पं. धर्मपाल ष ास्त्री, काष ीपुर ने कहा कि मैं आगे आना नहीं चाहता थां मुझे आर्यसमाज के विद्वानों के विचार सुनने में आनन्द आ रहा थां श्री धर्मपाल ष ास्त्री जी ने गुरुकुल के अनेक सत्रों में प. वेद प्रकाष ा श्रोत्रिय जी द्वारा दिये गये व्याख्यानों की भूरि भूरि प्रष ांसा कीं उन्होंने कहा कि वह गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की प्रस्तुतियों को देखकर भी भाव विभोर हुए हैं ष ास्त्री जी ने डा. रघुवीर वेदालंकार द्वारा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को संस्कृत अध्ययन कराने की भी प्रष ांसा कीं **प्राचीन काल में गुरुकुल षि ाक्षा**

प्रणाली में गुरुकुल का आचार्य ही ब्रह्मचारियों को स्नातक बनने पर दीक्षा दिया करता थां उस समय दोनों, आचार्य और ब्रह्मचारी, भाव विभोर हो जाते थें स्वामी दयानन्द जी की दीक्षा पर विचार करें तो दीक्षा के दिन स्वामी जी ने अपने प्रज्ञाचक्षु गुरु जी को गुरु दक्षिणा के रूप में लौंग भेंट किये थे और गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी ने ही स्वामी दयानन्द जी को दीक्षा दी थीं पं. धर्मपाल ष ाास्त्री जी ने आगे कहा कि गुरुकुल कांगड़ी के उत्सवों में हम सम्मिलित होते रहे हैं वहां भी आचार्य प्रियव्रत जी का ब्रह्चारियों को सम्बोधित दीक्षा भाशण सुनकर हम भाव विभोर व रोमांचित हो जाते थें

आर्य विद्वान पं. धर्मपाल ष ाास्त्री जी ने कहा कि गुरुकुलों में आचार्य का ब्रह्मचारियों के साथ 14 वर्श का सान्निध्य रहता हैं आचार्य अपने दीक्षान्त भाशण में अपने ष ि ाश्यों के सम्मुख गुणों व अवगुणों का उल्लेख करते हुए कहता है कि तुम हमारे सद्गुणों को लेते जाना और जो अवगुण आपने हममें देखों हों, उन्हें यहीं छोड़ जाना अर्थात् उन्हें अपने जीवन में ग्रहण मत करनां श्रोताओं को सम्बोधित कर उन्होंने कहा कि **आप यहां गुरुकुल ष ि ाक्षा प्रणाली का जीवन्त रूप देख रहे हैं** आचार्य धर्मष ाली ष ाास्त्री ने गुरुकुलों की चर्चा को जारी रखते हुए व उसके अनेक उदाहरण देते हुए कहा कि गुरुकुलों ने देष ा व समाज को अनेक प्रतिभाष ाली छात्र तैयार कर दिये है जिनकी प्रतिभा एवं योग्यता के प्रष ांसनीय कार्यों से देष ा का इतिहास भरा पड़ा हैं

आचार्य धर्मपाल ष ाास्त्री ने आगे कहा कि ष ि ाक्षा, चिकित्सा व न्याय मनुश्य के मौलिक अधिकार हैं यह सब को प्राप्त होने चाहियें उन्होंने कहा कि आष चर्य यह है कि आज यह सभी चीजें बिकती हैं प्राचीन काल में यह सब चीजें देष ावासियों को निःष ुल्क उपलब्ध होती थीं आज हमारे देष ा में उच्च ष ि ाक्षा और न्याय भी बिकता हैं आचार्य धर्मपाल जी ने कहा कि **गुरुकुल ष ि ाक्षा प्रणाली की अनेक विष ोशतायें हैं जो आधुनिक ष ि ाक्षा प्रणाली में नहीं हैं** गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों के सदाचार रूपी गुणों से देष ा और समाज के लोग आकर्शित होते थे व अब भी होते हैं **पं. धर्मपाल ष ाास्त्री जी ने कहा कि प्राचीन काल में आचार्य का अपने ष ि ाश्यों के प्रति व्यवहार माता–पिताओं के सन्तानों के प्रति व्यवहार से अच्छा होता थां उन्होंने कहा कि यह अब भी ऐसा ही होना चाहियें क्या आज गुरुकुलों में आचार्यों का व्यवहार माता–पिता के व्यवहार से अच्छा है? ष ि ाश्य को अपने आचार्य के अनुष ाासन का पालन करना चाहियें वह अनुष ाासनहीनता कदापि न करें** विद्यार्थियों में बिगाड़ का सबसे बड़ा कारण विद्यार्थी–संगठन Students Union हैं यह लोग न तो खुद पढ़ते हैं और न दूसरे छात्रों को पढ़ने देते हैं **पं. धर्मपाल ष ाास्त्री जी ने कहा कि पुरानी गुरुकुलीय व्यवस्था में सब ब्रह्मचारियों के प्रति हर दृश्टि से समानता का व्यवहार होता थां**

श्री धर्मपाल ष ाास्त्री ने देहरादून के प्रसिद्ध दून स्कूल के प्रथम संस्थापक प्राचार्य पिट साहब की चर्चा कीं ष ाास्त्री जी ने बताया कि उन्होंने दून स्कूल गुरुकुल कांगड़ी से प्रभावित होकर खोला थां उन्होंने बताया कि **'दून स्कूल'** में गुरुकुल की विष ोशताओं को लागू किया गया थां पं. धर्मपाल ष ाास्त्री जी ने अन्त में सभी श्रोताओं को गुरुकुल को सहयोग करने की सलाह दी जिससे वैदिक धर्म, भारतीय संस्कृति और सभ्यता जीवित रहें यह कहकर ष ाास्त्री जी ने अपने वक्तव्य को विराम दियां ओ३म् ष ाम्

–मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः09412985121